# दर्पणम

अंक-5 (मार्च-सितंबर 2022)

*ई- गृहपत्रिका पत्तनंतिट्टा का.क्षे. केरल* (75 सालगिरह स्वतंत्रता दिवस विशेष अंक)

**E-House Journal Pathanamthitta BA Kerala** *(75th Independence special Issue)*

*महाप्रबंधक दूरसंचार कार्यालय बीएसएनएल पत्तनंतिट्टा बीए तिरुवल्ला*

*O/o General ManageTelecom BSNL* Pathanamthitta BA, Thiruvalla

चित्रकार- निरंजन Niranjan Class-XII,

St. Mary's Public School, Thiruvalla

# दर्पणम ई –गृहपत्रिका

## Darpanam E-House Journal

**पत्तनंतिट्टा का.क्षे. Pathanamthitta BA**

अंक-5 (मार्च - सितंबर 2022)

**संरक्षक**
श्री साजु जोर्ज के, आईटीएस
Shri. Saju George K, ITS
प्रधान महाप्रबंधक दूरसचार PGMT

**उप संरक्षक**
श्री पी टी विवेकानंदन
Shri. P.T.Vivekanandan
उमप्र (प्र&यो)DGM(Admn&Plg)

**उप संरक्षक**
श्री रोबिन कुरियन जोसफ
Shri. Robin Kurien Joseph
उमप्र (एनडब्ल्यूपी) DGM (NWP)
श्री अनिल एम एस
Shri. Anil M.S.
उमप्र (विपणन)DGM (Mktg)

**अध्यक्ष**
श्री. प्रदीष टी एस
Shri. Pratheesh T.S.
सहायक महाप्रबंधक(प्रशा & विधिक)
Asst. General Manager (A&L)

**संपादक**
श्रीमती जोमोल के जैकब
Smt. Jomol K Jacob
कहिंअ Jr.HT

PRO जसंअ:
श्रीमती अनिला पी.के.Smt.Anila P.K.

**तकनीकी सहायक**
श्री लिट्टो के तोमस,समप्र (प्र.यो)
Sri.Litto.KThomas,AGM(OP)
श्री. रमेश टी. Sri.Ramesh T.
उमंइं (कंप्यूटर) SDE (Comp)
श्री. प्रवीण वी. Sri.Praveen V.
उमंइं (सतर्कता) SDE (vig)


**इस अंक में**


संपादकीय 4

संदेश 5

राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन - पत्तनंतिट्टा बीए 2022........ 6

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2022

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति तिरुवल्ला

भारत के कुछ प्रमुख कवि.......10

संचार माध्यमों की विकास यात्रा......13

चंद नग्मे.... .21

हमें गर्व का वक्त.... .16

पत्तनंतिट्टा कारोबार क्षेत्र 2022झलकियाँ ....17

भारत के कुछ प्रमुख कवियों को पहचानिए......10

भारत के राष्ट्रपति (1947-2022)..........19

स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख नेताएँ..............22

चित्रों की दुनिया............24

संग्राम - प्रमुख नेताएँ...........25

स्वतंत्रता दिवस……27

चाँद के साथ.................29

വിനോബാ ഭാവേ............31

ആരാകിലെന്ത്..........32

चित्रों की दुनिया....33

ओणम 2022.......34

भारत माता.....35

സ്വാതി തിരുനാൾ........36

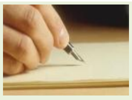

## संपादकीय.........

**भारत के राष्ट्रपति द्रौपती मुर्मू को प्रणाम**

**" राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।"- महात्मागांधी**

बीएसएनएल पत्तनंतिट्टा कारोबार क्षेत्र के ऑनलाइन राजभाषा गृहपत्रिका ' दर्पणम ' के पांचवां अंक प्रकाशित हो रहा है। हिंदी के विकास यात्रा हो रही है। हम सब इसमें अपना अपना हिंस्सा देती जा रही हैं। राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन कार्य में अच्छी भागीदारी किए जा रहे हैं। राजभाषा का द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय महा सम्मेलन गुजरात के सूरत में सितंबर 14 को माननीय गृहमंत्री के दीप प्रज्वलन से संचालित किया गया। महात्मागांधी ने ऐसा कहा गया है , "राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।" स्वतंत्रता संग्राम के पच्चहत्तरीयवाँ सालगिरह अमृत महोत्सव के रूप में हम मनाया गया। घर-घर में राष्ट्रीय ध्वज फहराने का आह्वान प्रधानमंत्री जी ने दिया। हमारे कार्यालयों में भी ध्वजारोहण समारोह विशेष रूप से आयोजित किया गया।हम सब मिलजुलकर देश की समृद्दि एवं हरसंभव विकास को ध्यान में रखते हुए कार्य करना है। आज़ादी की लडाई के दौरान प्रस्तुत प्रयाण गीत का स्मरण पुष्प की अभिलाषा प्रयाण गीत हिमाद्रि तुंग क्षृंग से , प्रबुद्ध शुद्ध भारती स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती सभी के दिमाग में होगा। हमारे पत्तनंतिट्टा कारोबार क्षेत्र के सभी अधिकारियों एवं कर्मचरियों को आपके सहयोग के लिए कृतज्ञता देती हूँ। पत्रिका में प्रकाशित करने के लिए चित्र व लेखन सामग्रियाँ दिए सभी को इस अवसर पर बधाइयां देती हूँ। राजभाषा के प्रयोग के लिए उपयोगी एक ऑनलाइन सहायक पुस्तिका भी प्रकाशित हो रही है। आप सभी सो अनुरोध है कि इससे फायदा उठाकर हिंदी के विकास यात्रा में योगदान कर दें। शुभकामनाओं के साथ, धन्यवाद। बडी खुशी की बात है कि हिंदी पखवाड़ा समारोह में बहुत सारी कर्मचारियों ने भाग लिया। के विकास यात्रा में योगदान कर दें। शुभकामनाओं के साथ, धन्यवाद। आपका,

भवदीया

29.09.2022,
तिरुवल्ला

जोमोल के.जैकब
कहिअ, पत्तनंतिट्टा का.क्षे.

# संरक्षक की कलम से

श्री. साजु जोर्ज के, आईटीएस
Shri.Saju George K, ITS
प्रधान महाप्रबंधक दूरसंचार
Principal General Manger
पत्तनंतिट्टा का.क्षे., Pathanamthitta BA

**भारत संचार निगम लिमिटेड़**
**Bharat sanchar Nigam Limited**
**( भारत सरकार का उद्यम A Govt. Of India Enterprise)**

प्यारे साथियो

आपको पता होगा कि हमारे पत्तनंतिट्टा बीए की गृहपत्रिका दर्पणम ई - पत्रिका के रूप में जारी की जा रही है। यह हमारी ई-पत्रिका के पाँचवां अंक है। हमारे कार्यालय के विविध कार्यक्रमों को आप सभी को अवगत करवाना इसका एक लक्ष्य है। इसके साथ सभी कर्मचारियों के बीच अपनी सृजनात्मक सामग्रियों को बाँटने का अवसर भी इसके द्वारा प्राप्त हो जाती है। इस असपर पर , मैं एक विशेष समाचार बांटना चाहता हूँ कि , केंद्र सरकार द्वारा घोषित की गई रिवाइवेल पैकेज में बीएसएलएल को दो परियोजनाएँ सौंपे गए हैं। एक, 1. आत्मनिर्भर भारत की हिस्सा बनकर स्वदेशी '4 जी ' परिनियोजन, जिसे 5 जी में अपग्रेड करने का प्रस्ताव

भी है। अब प्रयुक्त टेलीकोम कोर उपकरण विदेश में उत्पादित होने वाले हैं। दूसरी परियोजना यह है, यू एस ओ निधि के अधीन भारत के 24680 गांवों में संपूर्ण रूप से 4 जी पहुँचाना तथा मोबाइल कवरेज उपलब्ध करवाना है। अभी पूरे टेलीकोम उपकरण का निर्माण विदेश में किया जा रहा है। यह हमें प्रगति की सूचना देती है।

हर वर्ष की तरह पत्तनंतिट्टा का.क्षे. में हिंदी पखवाड़ा 2022 समारोह विभिन्न कार्यकलापों के साथ आयोजित किया गया। उत्साह से आप लोग भाग लिया। सभी को बधाइयाँ ।

मोबाइल, एफटीटीएच, लैंडलाइन, ब्रॉडबैंड कनेक्शन आदि विभिन्न सेवाओंको बढ़ाना , चालू कनेक्शनों को अच्छी सेवा से बनाए रखना आदि हमारे कारोबार क प्रमुख मद हैं। इसके अनुरूप बिज़िनेज़ में वृद्धि लाने का प्रयास करके आगे बढ़ने का आह्वान करते हुए , आप सभी को बधाइयाँ तथा शुभकामनाओं के साथ ,

आपका,

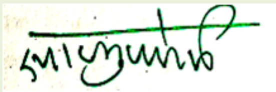

श्री.साजु जोर्ज के.,आईटीएस
Sri. Saju George K, ITS
प्रधान महाप्रबंधक दूरसंचार
P G M Telecom
पत्तनंतिट्टाका.क्षे. PTA BA

**पत्तनंतिट्टा**
**29.09.2022**

# राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन - पत्तनंतिट्टा बीए

तिरुवल्ला कारोबार क्षेत्र में गृहमंत्रालय राजभाषा विभाग से प्राप्त वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार सभी मदों का पालन किया जा रहा है। पत्राचार एवं टिप्पण आलेखन के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर चुका है। कंप्यूटरों में द्विभाषी सुविधा उपलब्ध है।

राजभाषा कार्यान्वयन कार्य में वृद्धि लाने हेतु आज का शब्द प्रदर्शित करना, राजभाषा हेल्पडेस्क, गृहपत्रिका आदि इंट्रानेट में प्रदर्शित किया गया है। हर तिमाही में हिंदी कार्यशाला आयोजित की जा रही है। कोविड-19 महामारी के कारण रोग व्यापन से बचाने के लिए सामूहिक दूरी बनाए रखते हुए पिछले वर्ष से सभी कार्यक्रम तथा बैठकें ऑनलाइन में आयोजित कर रहा है। निधि की अपर्याप्तता से प्रोत्साहन योजना चालू नहीं है। तिमाही प्रगति रिपोर्ट तथा टोलिक की अर्धवार्षिक रिपोर्ट निर्धारित समय पर ही अपलोड़ कर रही है।

पत्तनंतिट्टा करोबार क्षेत्र की गृहपत्रिका ‘ दर्पणम ’ का तीसरा अंक ऑनलाइन में प्रकाशित किया गया। राजभाषा सहायिका के रूप में **हिंदी दोस्त** नामक ई-पुस्तिका भी तैयार हो गई है।

तारीख 29.06.2021 और 22.09.2021को जून और सितंबर तिमाही की हिंदी कार्यशालाएँ ऑनलाइन में आयोजित की गईं।

तारीख 23.06.2021 और तारीख 14.09.2021 को जून और सितंबर को समाप्त तिमाही की राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठकें ऑनलाइन में आयोजित की गईं।

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2022 का ऑनलाइन उद्घाटन दीप जलाकर कर रहे हैं – श्री . साजु जोर्ज के, आईटीएस, महाप्रबंधक दूरसंचार, पत्तनंतिट्टा, साथ खडे हैं ( बाएँ से), श्रीमती तारा जी. पुरुषोत्तमन, समप्र (प.यो)।श्री.सुनिल मात्यू, स.म.प्र (यो),प्रिया सदानंदन , उमंइं(प.यो), जोमोल के जैकब ,क.हि.अ, श्री. सुधीर पी .एस,म.ले.अ.(

टीआर)।–स्थान म.प्र.दू के कमरे में 24 अप्रैल को और 12 अक्तूबर ( सितंबर से स्थगित) को टोलिक की अर्धवार्षिक बैठकें ऑनलाइन में आयोजित की गईं।

**हिंदी पखवाड़ा समारोह 2022** पत्तनमतिट्टा बी ए में 15.09.2022 से 29.09.2022 तक हिंदी पखवाडा मनायी गई। 15.09.2022 के पूर्वाह्न 11.00 बजे उद्घाटन समरोह संपन्न हुआ। श्रीमती. बेट्टी वर्गीस , कदूअ और श्रीमती. रिया वर्गीस , कलेअ के प्रार्थना गीत के साथ हिंदी पखवाडा का शुभारंभ हुआ। श्री. प्रदीप टी.एस समप्र(प्रशा-विधिक)

श्री साजु जोर्ज के, आईटीएस, प्रधान महाप्रबंधक दूरसंचार, पत्तनंतिट्टा ने दीप जलाकर हिंदी पखवाडा का उद्घाटन किया। श्री. प्रदीष टी.एस., सहायक महाप्रबंधक, (प्रशासन –विधिक) ने सभी का स्वागत किया। श्री. विवेकानंदन पी.टी ,उमप्र(प्र-यो), श्री. रोबिन कुरियन जोसफ, उमप्र(एनडब्ल्यूपी), श्री. अनिल एम एस, उमप्र (विपणन) और श्री.सुधीर पी.एस, सीएफए आदि ने बधाइयाँ दीं । दीप जलाते समय आलाप किए देश भक्ति गीतों से कार्यक्रम ज्यादा आकर्षक बन गया। श्रीमती जोमोल के जैकब, कहिअ ने कार्यक्रम में भाग लिए सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों को धन्यवाद ज्ञापित किया ।

पखवाड़ा के दौरान हिंदी प्रश्नोत्तरी, श्रुतलेख, हस्तलेख, प्रशासनिक शब्दावली, निबंध लेखन, हिंदी गीत गायन आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। हिंदी अनुवादक जोमोल द्वारा राजभाषा नियम तथा सामान्य हिंदी पर कक्षा चलाई। 25 अधिकारी एवं कर्मचारी ने उसमें भाग लिए।

तारीख 29.09.2022 को संपन्न हुई समापन समारोह में श्री.प्रदीष टी.एस, सहायक महाप्रबंधक (प्रशासन & विधिक) ने स्वागत भाषण किया। श्री. विवेकानंदन पी.टी.,उप महाप्रबंधक ने अध्यक्षीय भाषण

दिया और बताया कि संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का स्थान, आज हम सभी को आवश्क बन गया है। पत्तनंतिट्टा बीए के ई-बुलेटिन **दर्पणम** प्रकाशन के लिए तैयार हो गई है। कर्मचारी एवं उनके बच्चों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। हिंदी गीतमाला बैठक को ज्यादा आकर्षक की गई। श्री. रोबिन कुरियन जोसफ, उमप्र( एनडब्ल्यूपी), श्री. अनिल एम.एस. उमप्र( विपणन), श्री.सुधीर पी.एस, सीएफए आदि अधिकारियोम ने बैठक में आशीर्वाद भाषण दिया। प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किया गया। कहिअ जोमोल के जैकब ने बैठक में सभी को कृतज्ञता ज्ञापित की। 50 कर्मचारियों ने हिंदी के विभिन्न ऑनलाइन प्रतियोगिताओं में भाग लिया। राष्ट्रगीत के साथ हिंदी पखवाड़ा समारोह 2021 समाप्त हुआ।

## हिंदी कार्यशालाएँ

हिंदी कार्यशाला- टेलिफोन एक्सचेंज, तिरुवल्ला हिंदी कार्यशाला-मप्रदूकार्यालय, सम्मेलन कक्ष।
श्री.रोबिन कुरियन जोसफ(उमप्र) ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। क.हि.अ जोमोल और भागीदारियाँ

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2022 का समापन समारोह अध्यक्षीय भाषण दे रहे हैं- श्री. विवेकानंदन पी.टी., उमप्र ( प्रशासन & योजना) ने कार्याशाला का उद्घाटन किया- स्थान कॉनफरेंस हॉल, म.प्र.दू. कार्यालय, तिरुवल्ला।

## नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति तिरुवल्ला (टोलिक तिरुवल्ला)

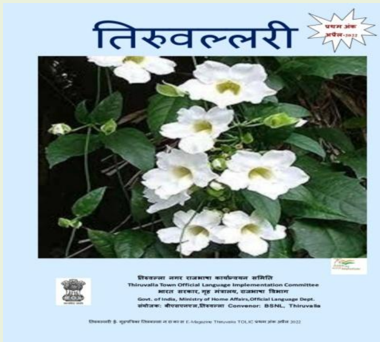


तिरुवल्ला नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (टोलिक) का संयोजक हमारे बीएसएनएल कार्यालय और उसके अध्यक्ष महाप्रबंधक भी है। टोलिक के सभी कार्यों व बैठकों को महाप्रबंधक के मार्गनिर्देशों के अनुसार सुचारु रूप से संपन्न हो रहा है। इस वित्तीय वर्ष की अर्ध वार्षिक बैठकें तारीख 27.04.2022 को और 15.09.2022 को ऑनलाइन में संपन्न हुई और अध्यक्ष साजु जोर्ज के, आईटीएस और तिरुवल्ला नगर के विभिन्न केंद्रसरकारी कार्यालयों, बैंकों, उपक्रमों आदि सदस्य कार्यालयों के प्रमुख तथा प्रतिनिधि भागीदार रहे।

# हिंदी कार्यशाला
## -मप्रदू कार्यालय, तिरुवल्ला

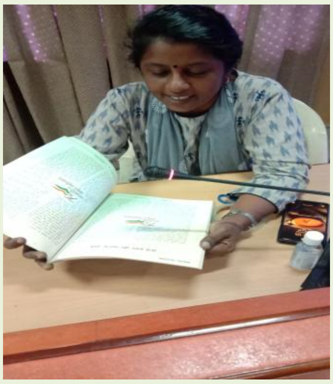

## पुरस्कार वितरण समारोह

वितरण कर रहे हैं-
श्री.विवेकानंदन पी.टी.,उमप्र(प्र-यो)

## तारीख 29.09.2022 को संपन्न हुई हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण -2022

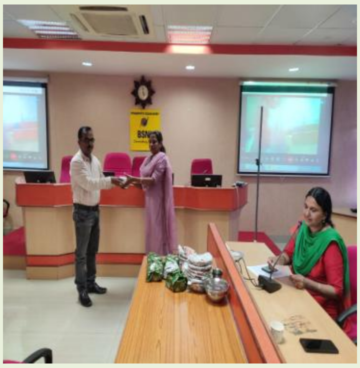

# भारत के कुछ प्रमुख कवियों को पहचानिए

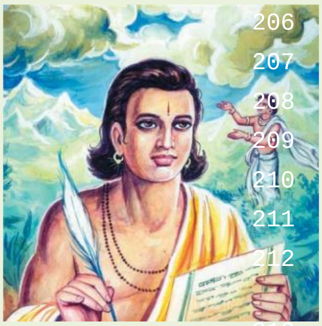

महान कवि कालिदास, जिनका जन्म पहली से तीसरी शताब्दी इस पूर्व के बीच उत्तर प्रदेश में माना जाता है। उनकी पत्नी का नाम राजकुमारी विधोतमा था। इनका पूरा नाम महाकवि कालिदास था। माना जाता है कि कालीदास मां काली के परम उपासक थे, कालिदास जी के नाम का अर्थ है 'काली की सेवा करने वाला'।कालिदास अपनी कृतियों के माध्यम से हर किसी को अपनी तरफ आर्कषित कर लेते थे , एक बार जिसको उनकी रचनाओं की आदत लग जाती बस वो उनकी लिखी गई आकृतियों में ही लीन हो जाता था।

कबीर दास की गिनती उन कवियों में होती है जिन्होंने अपने दोहे , रचनाओं से सभी को मंत्रमुग्ध किया है। उनका जन्म 1398 ई में वाराणसी गांव के उत्तर प्रदेश में हुआ था। उनके पिता का नाम नीरू झूले ,माता का नाम नीमा था , उनकी पत्नी का नाम लोई था। उनके पुत्र का नाम कमल और पुत्री का नाम कमाली था और गुरु का नाम रामानंद जी था। वह बेहद ज्ञानी थे और स्कूली शिक्षा न प्राप्त करते हुए भी अवधि , ब्रज, और भोजपुरी और हिंदी जैसी भाषाओं पर इनकी बहुत अच्छी पकड़ थी। इन सब के साथ -साथ राजस्थानी, हरयाणवी, खड़ी बोली जैसी भाषाओं में महारथी थे। उनकी रचनाओं में सभी भाषाओं की के बारे में थोड़ी - थोड़ी जानकारी मिल जाती है इस लिये इनकी भाषा को 'सधुक्कड़ी' व 'खिचड़ी' कही जाती है।कबीर दास जी की मृत्यु 1518 मगहर गांव उत्तर प्रदेश में हुई थी।

**अब्दुल रहीम खानखाना** का जन्म 17 दिसंबर 1556 ईवी लाहौर में हुआ था। इनके पिता का नाम बैरम खां और माता का नाम जमाल खान था और माता का नाम सईदा बेगम था। उनकी पत्नी का नाम महाबानू बेगम था। वह इस्लाम धर्म के थे। वर्ष 1576 में उनको गुजरात का सूबेदार नियुक्त किया गया था। 28 वर्ष की उम्र में अकबर ने खानखाना की उपाधि से नवाज़ा था। उन्होंने बाबर की आत्मकथा का तुर्की से फारसी में अनुवाद किया था। नौ रत्नों में वह अकेले ऐसे रत्न थे जिनका कलम और तलवार दोनों विधाओं पर समान अधिकार था। उनकी मृत्यु 1 अक्टूबर 1627 ई में हुई।

तुलसीदास- महान कवि तुलसीदास का जन्म सन 1532 राजापुर गांव उत्तर प्रदेश में हुआ था ।उनके पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था ,उनकी पत्नी का नाम रत्नावली था। उनके गुरु का नाम आचार्य रामानंद था। वह एक संस्कृत विद्वान थे , लेकिन वह अवधी (हिंदी की एक बोली) में उनके कार्यों के लिए सबसे ज्यादा जाने जाते हैं। वह विशेष रूप से अपने "तुलसी-कृता रामायण" के लिए जाने जाते हैं, इसे "रामचरितमानसा" भी कहा जाता है साथ ही "हनुमान चालीसा" के लिए भी जाने जाते हैं। कुल मिलाकर , उन्होंने अपने जीवन काल में 22 प्रमुख साहित्यिक कार्यों का निर्माण किया।

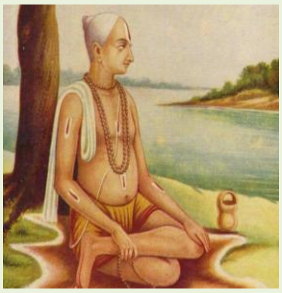

**सूरदास** -सूरदास का जन्म 1478 ईस्वी रुनकता में हुआ था। इनके पिता का नाम राम दास सारस्वत और गुरु का नाम वल्लभाचार्य था। सूरदास जन्म से ही अंधे थे। सूरदास की मृत्यु 1580 ईसवी में हुई। उनकी ब्रजभाषा थी, वह कार्य क्षेत्र के कवि थे। शिक्षा पूर्ण करने के बाद वह कृष्ण भक्ति में लीन हो गए। सूरसारावली में सूरदास के कुल 1107 छंद हैं, इसकी रचना उन्होंने 67 वर्ष की उम्र में की थी। उनके द्वारा रचित कुल पांच ग्रन्थ उपलब्ध हुए हैं , : सूर सागर, सूर सारावली,

साहित्य लहरी , नल दमयन्ती और ब्याहलो। सूरदास मथुरा-आगरा-राजपथ पर स्थित गऊघाट पर अपने शिष्यों-भक्तों के साथ रहकर कृष्ण भक्ति के पद गाया करते थे। और इसी कारण भारत में उनको हिंदी के प्रसिद्ध कवियों की लिस्ट में शामिल किया गया है।

**रवींद्रनाथ टैगोर-** रवींद्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई 1861 कलकत्ता में हुआ था। वह एक कवि ,साहित्यकार ,दार्शनिक थे। उनके पिता का नाम देवेंद्र नाथ टैगोर और माता का नाम शारदा देवी था। उनके सबसे बड़े भाई विजेंद्र नाथ एक दार्शनिक और कवि थे। उनके द्वारा रचित “ जन गण मन ” भारत का राष्ट्रीय गान है । बांग्लादेश का राष्ट्रीय गान “आमर सोना बांग्ला” भी टैगोर ने ही लिखा था ।रविंद्र नाथ टैगोर ने ही गांधीजी को सर्वप्रथम महात्मा का विशेषण दिया था । वह एक महान चित्रकार ओर देशभक्त थे ओर 1913 में “गीतांजलि” के लिए इन्हें साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला था ।उनकी मृत्यु 7 अगस्त 1941 कोलकाता में हुई। कविवर हरिवंश राय बच्चन का जन्म 27 नवंबर सन 1907 को इलाहाबाद में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी विषय में एम०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा 1942-1952 ई० तक यहीं पर प्राध्यापक रहे। 1976 ई० में उन्हें ‘पद्म भूषण ’ से अलंकृत किया गया।उनका निधन 2003 ई० में मुंबई में हुआ।

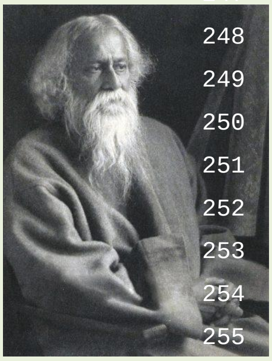

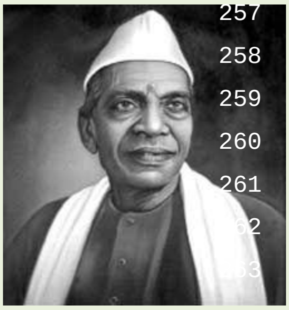

**मैथिलीशरण गुप्त-** राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ( 3 अगस्त 1886 – 12 दिसम्बर 1964) हिन्दी के प्रसिद्ध कवि थे। हिन्दी साहित्य के इतिहास में वे खड़ी बोली के प्रथम महत्त्वपूर्ण कवि हैं।उन्हें साहित्य जगत में ‘दद्दा’ नाम से सम्बोधित किया जाता था। उनकी कृति भारत-भारती (1912) भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के समय में काफी प्रभावशाली सिद्ध हुई थी और और इसी कारण महात्मा गांधी ने उन्हें ‘राष्ट्रकवि’ की पदवी भी दी थी। उनकी जयन्ती 3 अगस्त को हर वर्ष ‘कवि दिवस’ के रूप में मनाया जाता है। सन 1954 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया।

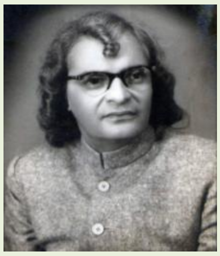

**सुमित्रानंदन पंत** -सुमित्रानंदन पंत जिनका जन्म 20 मई 1900 में कौसानी गांव उत्तराखंड में हुआ था । इनका दूसरा नाम गुसाईं दत्त है। उन्हें पद्म भूषण ,ज्ञानपीठ पुरस्कार ,साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया है। 1950 ईं में इन्हें ऑल इंडिया रेडियो के परामर्शदाता पद पर नियुक्त किया गया था और 1957 ईं तक ये प्रत्यंतर रूप से रेडियो के साथ संपर्क में रहे। सरलता, मधुरता, चित्रात्मकता, कोमलता, और संगीतात्मकता उनकी शैली की मुख्य विशेषताएं हैं।उन्होंने वर्ष 1916-1977 तक साहित्य सेवा की ,इनकी मृत्यु 20 दिसंबर 1977 इलाहाबाद उत्तर प्रदेश में हुई थी।

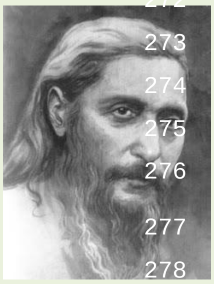

**सूर्यकांत त्रिपाठी** - सूर्यकांत त्रिपाठी का जन्म 1899ई महिषादल राज्य बंगाल में हुआ था। इनके पिता का नाम राम सहाय त्रिपाठी था। उनकी पत्नी का नाम मनोरमा देवी और पुत्री का नाम सरोज था। बचपन में इनका नाम सूर्यकुमार था।इनकी काव्य रचना सन 1915 से ही प्रारंभ हो गई थी, परंतु उनका प्रथम कविता-संग्रह ‘परिमल’ नाम से सन 1929 में ही प्रकाशित हुआ था।

कविता के अतिरिक्त कहानियां, उपन्यास, निबंध और आलोचना लिखकर भी निराला जी ने हिंदी साहित्य के के विकास में अपना बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान दिया था। इनकी मृत्यु

1961 ई में हुई।

**रामधारी दिनकर** -रामधारी दिनकर का जन्म 23 सितंबर 1908 में सिमरिया गांव, बेगूसराय जिला बिहार में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री रवि सिंह था और माता का नाम श्रीमती मंजू देवी था। इनके बड़े भाई का नाम बसंत सिंह था। इनका का उपनाम दिनकर था। भारतीय जन-मानस में जागरण की विचारधारा को प्रखर बनाने का पुनीत कार्य योजना रामधारी सिंह "दिनकर" जी के द्वारा कि गई थी | उनकी कविताओ में ओज , तेज और अग्नि जैसा तीव्र ताप , बिजली के लिए मशहूर है। उन्हें "राष्ट्रिय हिंदी – कविता का वैतालिक" भी कहा जाता है। उर्वशी" काव्य पर राष्ट्रीय ज्ञान पीठ का पुरस्कार प्राप्त हुआ और साथ ही राष्ट्रपति द्वारा पदम भूषण से सम्मानित भी किया गया | उनकी भाषा की सबसे बड़ी विशेषता यह है – अभिव्यक्ति की सटीकता और सुस्पष्टता, भाषा शुद्ध है। इनकी भाषा में संस्कृत के बहुत सारे शब्दों का भी अधिक मात्रा में प्रयोग हुआ है। उनकी मृत्यु 24 अप्रैल 1974 मद्रास चेन्नई में हुई थी।

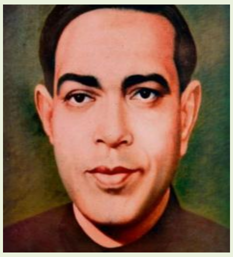

**क़ुंवर नारायण -** क़ुंवर नारायण 21वीं सदी के प्रमुख कवियों में से एक हैं। क़ुंवर नारायण का जन्म फैजाबाद, उत्तर प्रदेश में 1927 में हुआ था। सन् 2017 में उनका निधन हो गया। श्रुरुआत में उन्होंने फ्रांसीसी कवियों की कविताओं का अनुवाद किया। 1995 में साहित्य में अपना संपूर्ण योगदान देने के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

---------

चित्रकार- निरंजन Niranjan Class-XII, St.Mary's Public ,Class-XII, St.Thiruvalla, S/o Jeeva balakrishnan

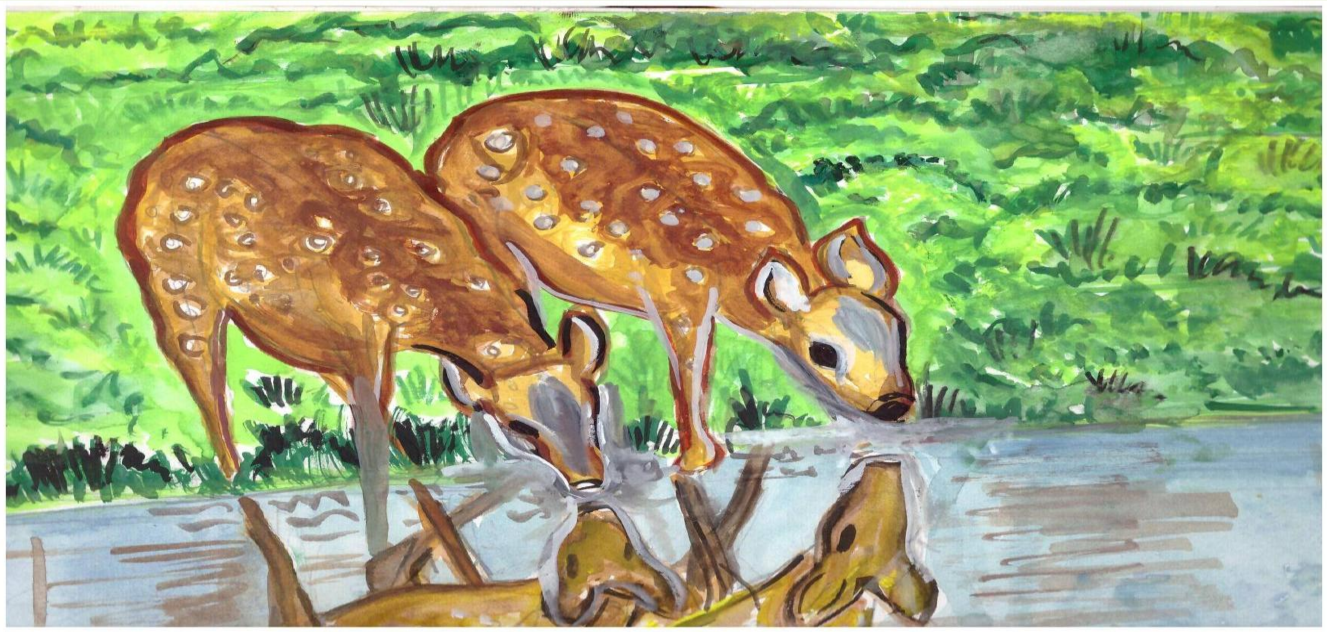

# संचार माध्यमों की विकास यात्रा

जिजो सी अब्राहम

Asst. General Manager (FTTH)
सहायक महाप्रबंधक(एफटीटीएच) तिरुवल्ला

सभी जीवित प्राणी सांस लेते हैं। आजकल, हम इस कथन को 'सभी जीवित प्राणी संचार करते हैं' जैसे संशोधित कर सकते हैं। यह उनमें एक सहज गुण है।पेड़ अपने आंदोलनों के रूप में ऐसा करते हैं। छोटे जीव अपने प्राकृतिक रसायनों के माध्यम से , बड़े जानवर अपने स्पर्श , शरीर की भाषा , ध्वनि और हावभाव के माध्यम से इस आदिम आवश्यकता को पूरा करते हैं। हम सभी जानते हैं कि एक बच्चे के जीवन में पहली बार संचार एक कमजोर रोना है। जन्म से लेकर कब्र तक जीवन विभिन्न प्रकार के संचारों का मिश्रण है। मानव जाति का इतिहास वास्तव में उसके संचार का भी इतिहास है।पुराने दिनों में मानव के संचारी जरूरतें सीमित थीं। चेहरे का हाव-भाव, मुस्कान, शरीर की भाषा, आवाज, स्पर्श, आदि उसकी सभी संचार संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त थे। धीरे-धीरे उन्होंने सामाजिक जीवन में प्रवेश किया। जैसे-जैसे मांग बढ़ी, मुखर भाषाओं का विकास हुआ। जब बोली जाने वाली चीजों को संरक्षित करना एक आवश्यकता बन गई, तब सबसे पहले गुफा चित्र, चित्र भाषा, कोडित प्रतीक और अंत में आधुनिक अक्षर विकसित हुए।

जैसे-जैसे हम सभ्य होते गए, अंतर-समाज संबंध बढ़ते गए। दूरसंचार की आवश्यकता स्पष्ट हो गई। दूरी और समय की बाधाओं को हराने के लिए दूतों, प्रशिक्षित पक्षियों और जानवरों को नियुक्त किया गया था। शुरूआती दौर में कुछ संदेश देने के लिए तोपें चलाई जाती थीं, ढोल बजाया जाता था, झंडे लहराए जाते थे। दूर-दूर तक संदेश पहुंचाने में धुएं और दर्पणों बहुत प्रभावी थे। बहुत लंबी दूरी प्राप्त करने के लिए पुनरावर्तक स्टेशनों (Repeater Station) का उपयोग देखने योग्य दूरी (Line of Sight) में किया जाता था। कागज और प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार से, लोग संचार क्रांति में प्रवेश कर रहे थे। किताबें और समाचार पत्र उसके बाद सदियों तक मुख्य काम के घोड़े बने रहे । 19वीं शताब्दी के मध्य में, सैमुअल मोर्स (Samuel Morse) ने अंग्रेजी वर्णमाला में अक्षरों का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक कोड बनाया और जोसेफ हेनरी (Joseph Henry) ने इन कोडों को तारों पर विद्युत दालों के रूप में बहुत दूर स्थानों तक प्रसारित करने के लिए एक प्रणाली का आविष्कार किया। यह था टेलीग्राफ, संक्षेप में, तार। इसकी मदद से उन्होंने युद्ध जीते, महाद्वीपों पर विजय प्राप्त की और विश्व पर शासन किया। तीन दशकों के भीतर, ग्राहम बेल (Graham Bell) द्वारा टेलीफोन का आविष्कार किया गया था। केवल दस वर्षों में, ग्राहम बेल के टेलीफोन को स्ट्रोगर ((Strowger) द्वारा आविष्कार किए गए एक स्वचालित एक्सचेंज (Automatic Exchange) के माध्यम से जोड़ा गया था। फैक्स, टेलीप्रिंटर आदि टेलीफोन और टेलीहेराफ के विभिन्न अवतार थे।

बीसवीं शताब्दी की सुबह सभी दूरसंचार प्रणालियों में सबसे लोकप्रिय में से एक देखी गई - रेडियो। पांच वर्षों में, विकसित देशों में टेलीविजन प्रसारण शुरू हुआ । लेकिन रेडियो की लोकप्रियता और पहुंच अछूती रही। वर्ष 1946 को सुनहरे रंग में चिह्नित किया जाना है, जिसमें पहले प्रोग्राम योग्य कंप्यूटर ENIAC का जन्म हुआ था। दशकों तक, ENIAC और भाई-बहनों ने शायद ही एक बंद प्रयोगशाला में सह-संचार किया हो। इस समय, भू-स्थिर उपग्रह पहले से ही ऊपर की कक्षाओं में थे, खेल जारी रखने के लिए तैयार थे। बीसवीं सदी के मध्य से इंटरनेट पर प्रयोग और शोध चल रहे थे। पहला ई-मेल 1971 में भेजा गया था। हालांकि इस ई-मेल की बॉडी सिर्फ 'QWERTY' थी, फिर भी , इसने इंटरनेट युग की शुरुआत को चिह्नित किया। 1975 में, पर्सनल कंप्यूटर की व्यावसायिक प्रविष्टि ने इस क्रांति को मजबूत किया।

वर्ष 1991 में एक और समानांतर प्रयोग सफल हुआ - मोबाइल टेलीफोनी। इंटरनेट और मोबाइल फोन ने दुनिया को किसी की भी कल्पना से परे बदल दिया। संचार के कई पुराने तरीके, जैसे, रेडियो, कैसेट, डिस्क, टेलीग्राफ, लैंडफोन, फैक्स, कैमरा आदि ने अपनी महिमा खो दी। इंटरनेट और मोबाइल फोन ने इन सभी सेवाओं को अधिक कुशलता से पूरा किया। सभी प्रकार के संचार इंटरनेट के महान महासागर में धीरे-धीरे घुल रही हैं।

इक्कीसवीं सदी ने एक नए प्रकार के संचार मंच - सोशल मीडिया - का उदय देखा। उदाहरण फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप आदि हैं। कोविद -19 अवधि ने इसके विकास को सुविधाजनक बनाया। लोग अपनी मित्रता को जीवित रख रहे हैं, अपनी सामाजिक प्रतिबद्धताओं को पूरा कर रहे हैं, विचारों का प्रसार कर रहे हैं, व्यापार का निर्माण कर रहे हैं - महाद्वीपों के बीच - अपने रहने के कमरे को छोड़े बिना।

निर्जीव कभी सांस नहीं लेते, लेकिन, वह दिन आ गया है जब वे बोलते हैं, सुनते हैं, मानते हैं और दूसरों को निर्देश देते हैं। घर में हमारी वॉशिंग मशीन हमारे पसंदीदा वॉश प्रोग्राम के बारे में हमारे निजी सहायक - Amazon Alexa या Google सहायक से पूछ सकती है। चीजों की इंटरनेट (IoT) ने हमारे घरों और कार्यालयों के जादुई परिवर्तन के लिए रास्ता खोल दिया है जैसा कि केवल परियों की कहानियों में सुना जाता है। संचार के विकास के साथ, जीवन एक सुंदर परियों की कहानी की तरह हो जाएगा - सीमा होगी हमारी कल्पनाएं।

.....................

**Under the Official language Rule, the country has been divided into 3 regions. A,B & C**
**Region A- Uttarpradesh, Madhya Pradesh, Bihar, Rajasthan, Haryana,Himachal Pradesh, Utharanchal, Jharkhand, Chathisgarh, Andaman and Nicobar islands and Delhi.**

**Region B- Gujarat, Punjab, Maharashtra and the Union territory of Chandigarh.**

**Region C- All other States and Union Territories.**

अडूर मीट

ग्राहक ,आमने –
सामने

# हमें गर्व का वक्त

बीएसएनएल 4-जी और इंटरनेट सेवाएँ- लैव चैनल पर आदरणीय प्र.म.प्र.दू.श्री.साजु जोर्ज टी,आईटीएस

जिलाधीश (कलेक्टर) श्रीमती दिव्या आईएएस पत्तनंतिट्टा के साथ

पत्तनंतिट्टा बीए के लिए पुरस्कार प्राप्ति- मुख्य महा प्रबंधक तिरुवनंतपुरम से, महाप्रबंधक श्री. साजु जोर्ज के, साथ खड़े हैं सीएफए, सुधीर पी.एस.

# पत्तनंतिट्टा कारोबार क्षेत्र 2022 की विभिन्न झलकियाँ

विश्व पर्यावरण दिवस–जून 5

पौधा लगाते हैं,प्र.म.प्.दू.,

श्री. साजु जोर्ज के और
उमप्र(प्र-यो)
श्री.विवेकानन्दन पी.टी.

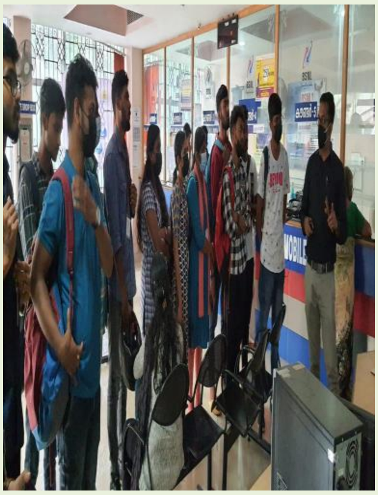

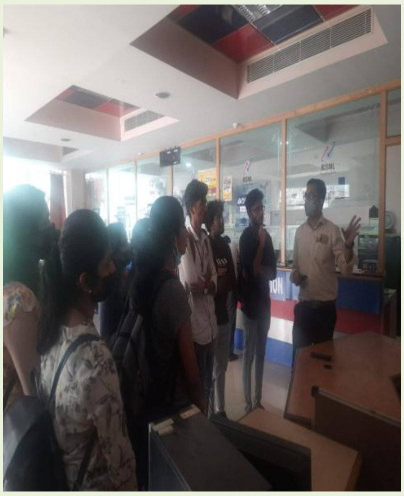

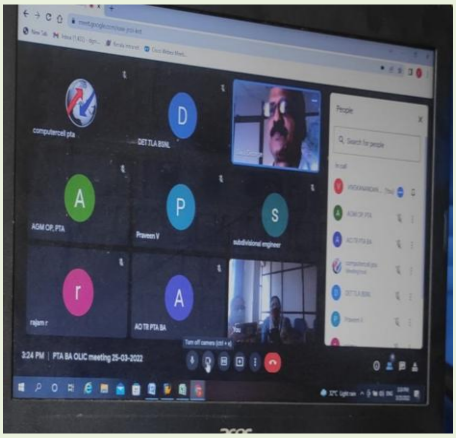

# पत्तनंतिट्टा बीए की मलाओं की झलकियाँ

# भारत के सभी राष्ट्रपतियों की सूची (1947-2022), कार्यकाल

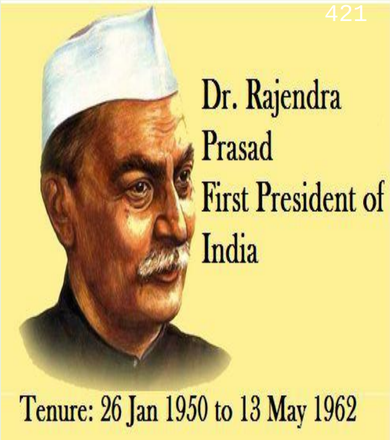


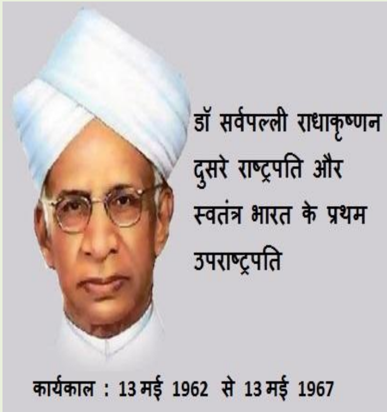


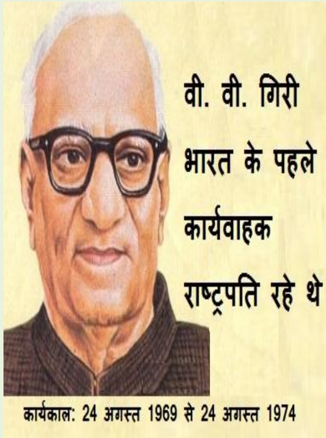


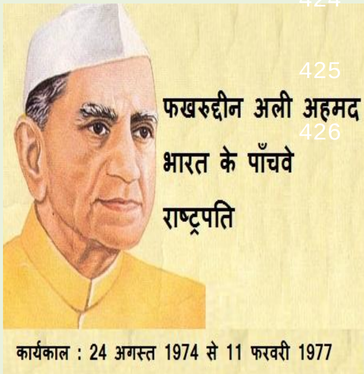


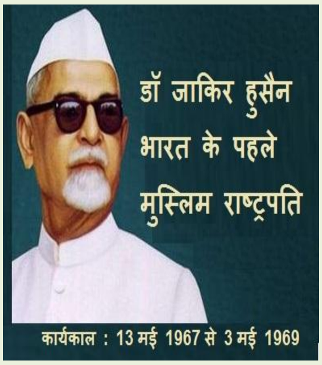


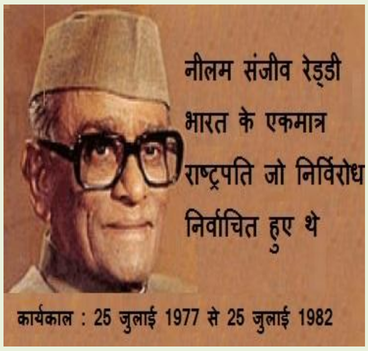


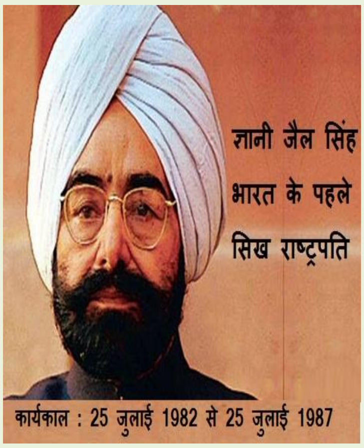


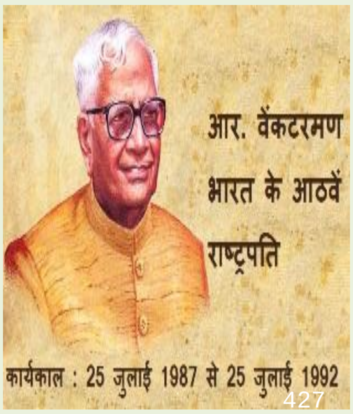


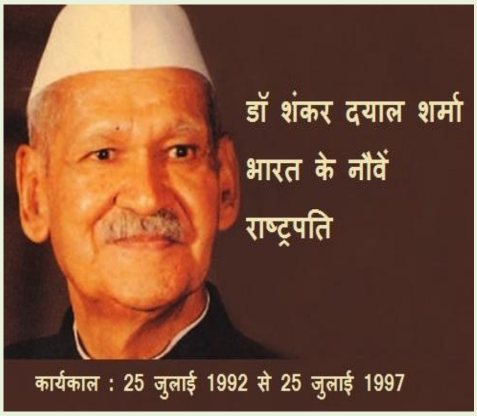

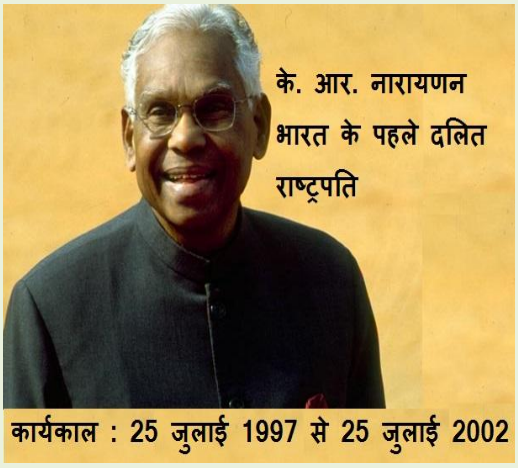


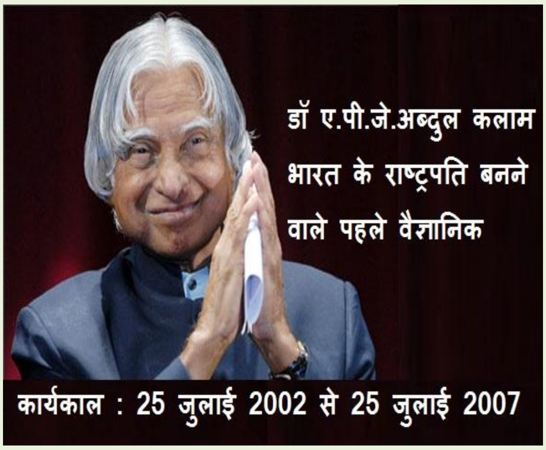

द्रौपदी मुर्मू भारत की 15वीं राष्ट्रपति बनीं. द्रौपदी मुर्मू का जन्म 20 जून 1958 को ओडिशा के मयूरभंज जिले के उपरबेड़ा गांव में एक संथाली आदिवासी परिवार बिरंची नारायण टुडू के घर हुआ था. वह झारखंड की पूर्व राज्यपाल रही हैं. उन्हें वर्ष 2007 में, ओडिशा विधान सभा द्वारा सर्वश्रेष्ठ विधायक (विधान सभा सदस्य) के लिए नीलकंठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था.

# चंद नग्मे

**देविप्रिया , उमंइं.(एचआर)**

**1.**

प्यार इतना चुभता क्यूं है
और यूँ रिछाता क्यूँ हैं
सांसें रुके और सन्नाटा सा क्यूँ हैं
खिलना न था तो ये मिलना क्यूँ।

**2**

चुपके चुपके वो नज़रों का मिलना
होठों पे सजे फूलों का खिलना
बिन कहे बिन सुने दिलों का मिलना
हे यही प्यार का खेल है न।

**3**

माना अजनबी बन गए हम
झूठा है ये प्यार कह गए हम  पर
दिलों में भर गए गम
ये जिंदगी तेरे क्या ए सितम।

**4**

ढूँढा तुझे गली गली में
फूलों में कलियों में
मस्त शोरों के चंगुल में
गुफ्त गुपाओं के सन्नाटों में
पगली ये पहचान न पाई
तू तो बस रहा है कान्हा
मेरे ही मन की बस्ती में।

…………………………….

# स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख नेताएँ

**(हिंदी पखवाड़ा 2022 प्रतियोगिता में पुरस्कृत लेख)**

JEWEL MARIA SABU
D/o Smt.Aniila P.K.,AGM(CSC)

अगस्त 1947 में भारत को ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता मिली। स्वतंत्रता सेनानियों के प्रयासों से स्वतंत्रता प्राप्त हुई , जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता की यात्रा की रीढ़ के रूप में कार्य किया। यह निबंध आपको उन स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में बताएगा, जिन्होंने बारत की स्वतंत्रता के लिए अपना योगदान दिया और अपने प्राणों की आहुती दी।

**महात्मागांधी-** महात्मागांधी का जन्म 2 अक्तूबर, 1869 को हुआ था। उन्हें बारत के लिए उनके अपार बलि दानों के लिए राष्टरपिता के रूप में जाना जाता है। भारत को स्वतंत्रता की ओर ले जाने के साथ -साथ , उन्होंने कई अन्य देशों के स्वतंत्रता प्रयासों के लिए एक प्रेरणा के रूप में भी काम किया। गाँधी, जिन्हें बापू के नाम से भी जाना जाता है , भारत में अहिंसा के विचार को पेश करने के लिए जिम्मेदार थे। उनके निर्देशन में ऐतिहासिक असहयोग आंदोलन , ढांडी मार्च और भारत छोड़ो आंदोलन सभी शुरू किए गए । 30 जवनरी 1948 को नई दिल्ली में उनकी हत्या कर दी गई थी। इस महान स्वतंत्रता सेनानी –महात्मा गाँधी के बिना बारत की स्वतंत्रता की राह संभव नहीं हो सकती थी।

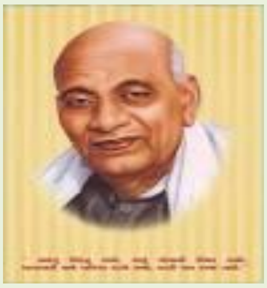

**सरदार वल्लभ भाई पटेल -**वल्लभ भाई पटेल का जन्म 31 अक्तूबर 1875 को हुआ था। वे भारत के एक महत्वपूर्ण स्वतंत्रता सेनानी भी थे , जिनकी उपस्थिति के बिना बारत का स्वतंत्रता संग्राम अधूरा था। पूर्व में एक वकील , सरदार पटेल ने अपने कारियार से सेवानिवृत्ति ले लिया और ब्रिटिश अधिकारियों के खिलाफविरोध करना शुरू कर दिया। वह गुजरात के सबसे प्रभावशाली नेता थे, जिन्होंने गाँधी के अहिंसा के आदर्शों प र आधारित अंग्रेज़ी से किसान आंदोलनों का नेतृत्व किया। उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप गभग 562रियासतों को एकीकृत किया गया था। उनके प्राक्रम के कारण उन्हें भारत का लौह पुरुष कहा जाता था। स्वतंत्रता के बाद , उन्हें भारत के उप प्रधानमंत्री के रूप में नियुक्त किया गया और रियासतों को भारत संघ में एकीकृत करने के लिए काम किया। 15 दिसंबर 1950 को मुंबई में उनका निधन हो गया।

**रानी लक्ष्मीबाई** -झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का जन्म 19 नवंबर 1828 में हुआ था। 1857 में भारत के संवतंत्रता आंदोलन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। एक महिला होने के बावजूद , उन्हेंने साहस और साहसी रवैये का परिचय दिया , जिसमें भाग लेने के लिए महिलाओं की एक विशाल श्रृंखला को सशक्त बनाया गया। स्तंत्रता संग्राम के लिए 1858 में उन्होंने सर हयू रोज़ की कमान में एक ब्रिटिश सेना के आक्रमण से अपने झांसी महल को बहादूरी से रक्षा की। उन्होंने अपने राष्ट्र को नियंत्रित करने के ब्रिटेन के इरादे के खिलाफ लडाई लडीं और भारत में स्वतंत्रता की प्रतीक बन गई। 18 जून 1858 को अंग्रेज़ों ने उनकी हत्या कर दी थी।

**भगत सिंह-** भगत सिंह का जन्म 27 सितंबर 1907 को हुआ था। वह भारत के एक प्रसिद्ध क्रांतिकारी और विवादास्पद स्वतंत्रता सेनानी थे। 1921 में, वह असयोग आंदोलन का हिस्सा बने। उन्होंने पंजाब के युवाओं में देशभक्ति को बढ़ावा देने के लिए नौजवान भारत की स्थापना की। चौरा -चौरा नरसंहार ने उसे बदल दिया और स्वतंत्रता की लडाई में उसे सीमा तक धकेल दिया। 13 साल की उम्र में, शहीद -ए-आजम भगत सिंह ने स्कूल छोड़ दिया और अपना शेष जीवन स्वतंततर्ा प्राप्त करने के लिए समर्पित कर दिया। 23 मार्च 1931 को अपने देश के लिए शहीद के रूप में उनका निधन हो गया।

भारत इन सेनानियों के बिना स्वतंत्र नहीं होता, जो अपनी मृत्यु तक भारत के लिए रहे हैं। तो आइए हम उनका सम्मान करें और अपने देश को और अधिक समृद्ध बनाएँ।

……………..

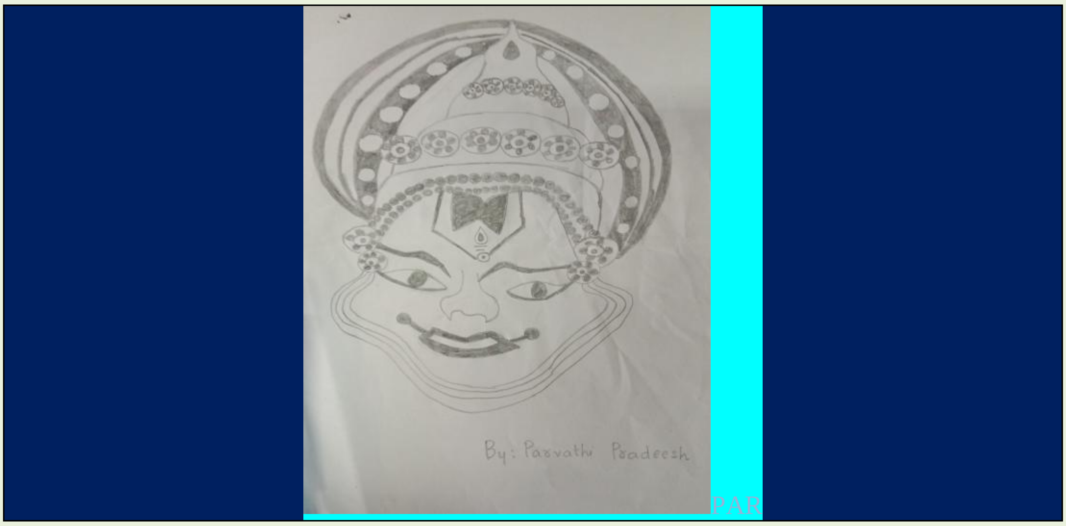


- Parvathy Pratheesh, D/o Shri. Pratheesh T.S., AGM (Admn& Legal)

# चित्रों की दुनिया

- निरंजन Niranjan Class-XII,
St. Mary's Public School, Thiruvalla
S/o Jeeva Balakrishnan,
JTO , O/o GMT, TLA

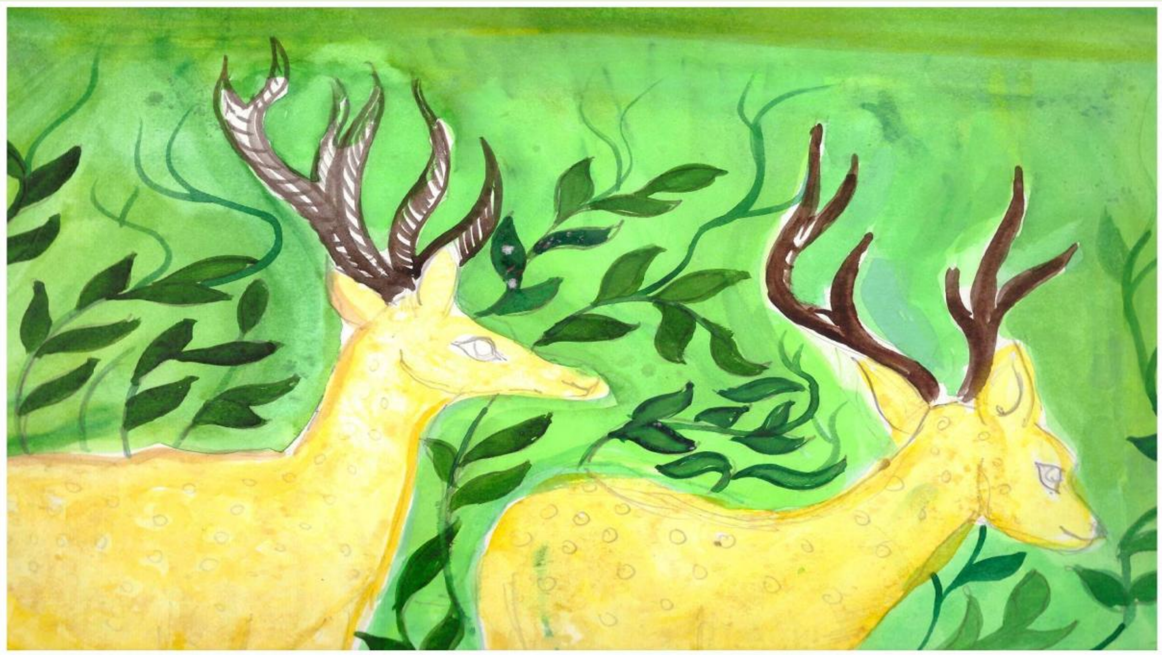

# स्वतंत्रता संग्राम - प्रमुख नेताएँ

**( हिंदी पखवाड़ा 2022 प्रतियोगिता में पुरस्कृत लेख)**

**Angelia Mary Joby,D/o
Smt. Reya Varghese,**

**JAO(Estt)TLA**

भारत के अंग्रेज़ों को बाहर करने के संघर्ष में देश के हर कोने के लोगों ने भाग लिया। उनमें से कई ने भारत के अत्याचारी शासन से मुक्त करवाने के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया। आइए हम कुछ महान हस्तियों पर एक नज़र डालें दिनके प्रयासों के बिना हम शायद आज भी ब्रिटिश शासन में होंगे।

**महात्मा गाँधी-**महात्मागाँधी का जन्म 2 अक्तूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर में हुआ था। इनका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गाँधी था। इनके पिता का नाम करमचंद गाँधी था। म ाता का नाम पुतलीबाई था , जो करमचंद गाँधी जी की चौथी पत्नी थीं। मोहनदास अपने पिता की चौथी पत्नी की अंतिम संतान थे। महात्मागाँधी को विदेश शासन के खिलाफ भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के नेता और 'राष्ट्रपिता' माना जाता है।

**सुभाष चंद्र बोस-** हमारे देश के एक महान नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को ओडीशा के कटक शहर में हुआ था। उनके पिता का नाम जानकीनाथ वोस और माँ का नाम प्रभावती था। उनके पिताजी कटक शहर के मशहूर वकील थे , जिससे भारत के कई युवा वर्ग भारत से अंग्रेज़ों को बाहर निकालने की लडाई लड़ने के लिए प्रेरित हुए। बाद में वो बंगाल कंग्रेस के वा ॉलंटीयर कमान्टेंड, नेशनल कैलेज के प्रिंसिपल, कोलकोत्ता के मेयर और उसके बाद निगम के मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में नियुक्त किए गए।

**जवाहरलाल नेह्रू -**जवाहरलाल नेह्रू का जन्म 14 नवंबर 1889 को ब्रिटिश भारत, इलाहाबाद में हुआ। उनके पिता , मोतीलाल नेह्रू एक धनी बैरिस्टर जो कश्मीरी पण्डित समुदाय से थे। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के दो बार अध ्यक्ष के रूप में चुने गए। जवाहरलाल नेह्रू जी को 1955 में भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। जवाहरलाल नेहरू जी को पं. नेहरू और चाचा नेहरू भी कहा जाता है, साथ ही उन्हें आधुनिक भारत के शिल्पकार भी कहा जाता है। जवाहरलाल नेहरू जी को सभी बच्चे चाचा नेहरू कहा करते थे, इस बजह से जवाहरलाल नेहरू जी के जन्मदिन 14 नवंबर को हर वर्ष बाल दिवस मनाया जाता है। पंडित जवाहरलाल नेहरू भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक अग्रणी व्यक्ति थे।वे स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री थे। उन्होंने आदर्शवादी समाजवादी किस्म की सामाजिक -आर्थिक नीतियों की शुरुआत की थी।वह एक विपुल लेखक थे और उन्होंने 'द डिस्कवरी ऑफ इंडिया ' और 'ग्लिम्पसेज़ ऑफ द वर्ल्ड हिस्ट्री ' जैसी किताबें

लिखीं। जवाहरलाल नेहरू भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के पिता थे।उन्होंने एक संसदीय सरकार की स्थापना की और विदेशी मामलों में अपनी गुटनिरपेक्ष या तटस्थ नीतियों के लिए जाने जाते हैं।उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया और 1930 और 40 के दशक में एक प्रमुख नेता थे। 27 मई 1964 को दिल का दौरा पड़ने से उनका निधन हो गया। दिल्ली में यमुना नदी के तट पर शांतिवन में उनका अंतिम संस्कार किया गया।

**लाल बहादूर शास्त्री-** श्री लाल बहादुर शास्त्री का जन्म 2 अक्टूबर 1904 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी से सात मील दूर एक छोटे से रेलवे टाउन , मुगलसराय में हुआ था। उनके पिता एक स्कूल शिक्षक थे। जब लाल बहादुर शास्त्री केवल डेढ़ वर्ष के थे। तभी उनके पिता का देहांत हो गया था। उनकी माँ का नाम रामदुलारी था। उनकी माँ अपने तीनों बच्चों के साथ अपने पिता के घर जाकर बस गईं।उस छोटे -से शहर में लाल बहादुर की स्कूली शिक्षा कुछ खास नहीं रही लेकिन गरीबी की मार पड़ने के बावजूद उनका बचपन पर्याप्त रूप से खुशहाल बीता।शास्त्री जी ने' जय जवान -जय किसान ' का नारा दिया। उन्हें वाराणसी में चाचा के साथ रहने के लिए भेज दिया गया था ताकि वे उच्च विद्यालय की शिक्षा प्राप्त कर सकें। घर पर सब उन्हें नन्हे के नाम से पुकारते थे। वे कई मील की दूरी नंगे पांव से ही तय कर विद्यालय जाते थे, यहाँ तक की भीषण गर्मी में जब सड़कें अत्यधिक गर्म हुआ

करती थीं तब भी उन्हें ऐसे ही जाना पड़ता था।बड़े होने के साथ-ही लाल बहादुर शास्त्री विदेशी दासता से आजादी के लिए देश के संघर्ष में अधिक रुचि रखने लगे। वे भारत में ब्रिटिश शासन का समर्थन कर रहे भारतीय राजाओं की महात्मा गांधी द्वारा की गई निंदा से अत्यंत प्रभावित हुए। लाल बहादुर शास्त्री जब केवल ग्यारह वर्ष के थे तब से ही उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर कुछ करने का मन बना लिया था 1954 में तत्कालीन प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू की अचानक मृत्युं होने के बाद लाल बहादुर शास्त्री जी 9 जून 1964 को प्रधानमंत्री पद के लिए चुने गए। देश क दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहदुर शास्त्री जी ने अपने 18 महीने के कार्यकाल में अनेको योजनाओ को चलाई – जैसे दूध की पूर्ति करने के लिएशवेत क्रांतिऔर अनाज के लिए हरित क्रांति। 11 जनवरी 1966 (61 वर्ष आयु ), ताशकंद (वर्तमान में उजबेकिस्तान में) में एक वाहन दुर्घटना में उनकी मृत्यु हुई।

# अगस्त 15 स्वतंत्रता दिवस 2022

**झंडा फहराते हैं – पत्तनंतिट्टा बीए के विभिन्न कार्यालय तथा मंडल**

**प्रदान महाप्रबंधक दूरसंचार ,क्षी.साजु जोर्ज ख., आईटीएस**

**कर्मचारियों द्वारा स्वच्छता- सफाई कर रहे हैं**

**आईपी टीवी प्रदर्शन एवं व्याख्या कर रहे हैं,**
श्री. दीपू

**इंटेर्नशिप के छात्रा के साथ क्षी. अनिल एम.एस समप्र (विपणन)**

## राजभाषा अधिनियम 1963

धारा 3(2) के अनुसार हिंदी कार्यान्वयन के लिए द्विभाषी प्रयोग शुरू किया। धारा 3 (3) के अनुसार निम्नसूचित दस्तावेज़ों को अनिवार्य रूप से द्विभाषी रखना चाहिए - संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएँ, प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट , प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के दोनों सदनों के समक्ष रखे जाने वाली प्रशासानिक तथा अन्य रिपोर्ट , सरकारी कागज़-पत्र, संविदाएँ, करार, अनुज्ञप्तियाँ, अनुज्ञा पत्र, टेंडर नोटिस और डेंटप्रपत्र संशोधित 1967 राजभाषा नियम- 1976 इन नियमों के अनुसार संपूर्ण देश को क, ख, ग जैसे तीन क्षेत्रों में रखा गया। क - बिहार , हरियाना, हिमाचल प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, उत्तरांचल, झारखंड, छत्तीसगढ़, आंडमान निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली ,केंद्रशासित प्रदेश ,ख- गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़ संघ शासित क्षेत्र

# चाँद के साथ

-आवणी मनीष, कक्षा-5
D/o Priya Maneesh
M.G.M. School, Thiruvalla

चंदा माम कितना प्यारा,
चेहरा कितना गोरा
कभी मेघ में तुम छिप जाते,
कभी –कभी मुस्कराते

कभी न तुम छिप जाओ मामा
मेरे आँगन आओ।
साथ मेरे तुम खेले मामा
मेरा दिल बहलाओ।

…………………

अगर तुम सूरज की तरह चमकना चाहते हो तो पहले सूरज की तरह जलना सीखो
– डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम

# Meaning of Janaganamana our National Anthem

Thou art the ruler of the minds of all people,
Dispenser of India's destiny.
Thy name rouses the hearts of Punjab, Sindh,
Gujarat and Maratha,
Of the Dravida and Odisha
and Bengal;
It echoes in the hills of Vindhya and the
Himalayas,
Mingles in the music of Ganga and Yamuna
and is chanted by
The waves of the Indian sea.
They pray for thy blessings and sing thy praise.
The saving of all people waits in thy hand,
Thou dispenser of India's destiny.
Victory, victory, victory to thee.

# വിനോബാ ഭാവേ

Jeeva Balakrishnan
JTO( Electrical)
O/o GMT, TLA

ഗാന്ധിയനും ഭൂദാനപ്രസ്ഥാന പോഷകനുമായ വിനോബാഭാവേ ബോംബേ സംസ്ഥാനത്തിൽ കൊലാബാ ജില്ലയിലെ ഗഗോദാ ഗ്രാമത്തി ൽ 1895 സെപ്റ്റംബ ർ 11-ന് ജനിച്ചു. ബാല്യകാലം കഴിച്ചുകൂട്ടിയത് ബറോഡയിലായിരുന്നു.അദ്ധ്യാപകൻ എന്ന ർഥ മുള്ള ആചാര്യ എന്നാണ് അദ്ദേഹം അറിയപ്പെട്ടിരുന്നത്.സാമുദായിക നേതൃത്വത്തിനുള്ള ആദ്യ മാഗ്സസെ പുരസ്കാരം ലഭിച്ചത് ഇദ്ദേഹത്തിനാണ്. അദ്ദേഹം 1916ൽ കോളേജ് വിദ്യാഭ്യാസം അവസാനിപ്പിച്ചു. ഇതേ വ ർഷം ത ന്നെ കാശിയി ൽ ഗാന്ധിജി നടത്തിയ പ്രഭാഷണം വിനോബായെ വല്ലാതെ സ്പ ർശിച്ചു. തുട ർന്ന് കുറച്ചുകാലം ആശ്രമവ്രതങ്ങൾ അനുഷ്ഠിച്ചുകൊണ്ട് ഗാന്ധിജിയോടൊപ്പം കഴിഞ്ഞു.

1921-ൽ വാ ർധയിൽ ആശ്രമം പണിതു. വിനോബാഭാവെയുടെ ആത്മീയ ഗവേഷണശാല യായിരുന്നു പൗനാറിലെ പരംധാം ആശ്രമം. 'പൗനാറിലെ സന്യാസി ' എന്നാണ് വിനോബാഭാവെയെ വിശേഷിപ്പിക്കുന്നത്.

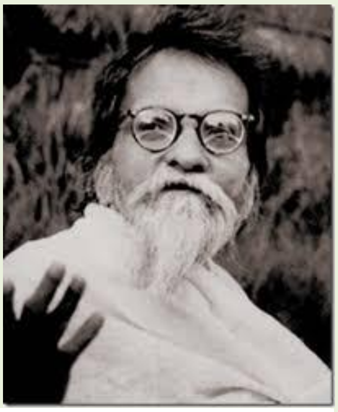

ഗാന്ധിജിയുമായി അടുത്ത ബന്ധം പുല ർത്തിയിരുന്നു. 1924ൽ വൈക്കം സത്യാഗ്രഹത്തിൻറെ നിരീക്ഷകനായി വിനോബാ കേരളത്തിലെത്തിയിരുന്നു. 1940ൽ ഗാന്ധിജി വ്യക്തിസത്യാഗ്രഹം ആരംഭിച്ചപ്പോൾ അദ്ദേഹം ഒന്നാമത്തെ ഭടനായി തിരഞ്ഞെടുത്തത് വിനോബായെ ആയിരുന്നു. മൂന്ന് തവണ വിനോബാ ജയി ൽവാസം വരിച്ചു. 1946ൽ പനാവറിലേക്കു മടങ്ങിവന്ന അദ്ദേഹം തോട്ടിപ്പ ണി ഔദ്യോഗികമായി സ്വീകരിച്ചു. 1948ൽ തെലുങ്കാന സന്ദ ർശിച്ച് പ്രസിദ്ധമായ ഭൂദാനപ്രസ്ഥാനത്തിനു രൂപം ന ൽകി. ഗാന്ധിജിയുടെ മരണാന്തരം സ ർവ്വോദയപ്രസ്ഥാനത്തിന് അദ്ദേഹം രൂപം കൊടുത്തു. ബഹുഭാഷാ പണ്ഡിതൻ കൂടിയായിരുന്നു വിനോബാജി.മരണം 1982 നവംബ ർ 15 ന് വാ ർധയിലെ പൗനാറിലായിരുന്നു.

1982ൽ മരണാന്തര ബഹുമതിയായി ഭാരതരത്നവും ഇദ്ദേഹ ത്തിന് സമ്മാനിക്കപ്പെട്ടു.

..................

കവിത

# ആരാകിലെന്ത്?

കനത്ത കാർമേഘം
പടർന്നു നിരന്നൊരു
കനച്ച നിദ്രയിൽ
കരുവാളിച്ചങ്ങകം
പനിച്ചു നീറവേ

മറഞ്ഞൊരോർമ്മയിലൊരു
കുഞ്ഞുകിളിയൊച്ച
തെളിച്ചമർന്നെങ്ങോ
മുഴങ്ങി കേൾക്കുന്നു.

അമ്മതൻ സാരിത്തുമ്പിനഗ്രം
മെല്ലെ തൻ കുഞ്ഞു വിരലാൽ
ചുറ്റിച്ചുറ്റി, അതിൻ പിന്നിലാ-
യൊരോമന മണിപ്പൈതലെൻ
കിനാവിൻ വാതിൽപ്പടിയിൽ
കിലുകിലെ ചിരിക്കുന്നു.

അറിയില്ലയാരോമലേ നീയാര്
മുഖമൊട്ടോർമ്മ കിട്ടുന്നുമില്ലല്ലോ
തെളിവില്ലാ ബോധവല്ലരിയിൽ
പണ്ടെങ്ങാനും വിരിഞ്ഞു
നിന്നൊരു സുന്ദരപുഷ്പമോ?

അറിയില്ലയൊട്ടും പക്ഷേ
കുഞ്ഞേ നിൻ മുഖദർശനം
പരത്തിയെന്നുള്ളിൽ
നൽ പ്രകാശപ്പിണറുകൾ

അകമെല്ലാം നിറഞ്ഞു
പടർന്ന കാറെല്ലാമടർന്നു
പോയെങ്ങോ, നിൻ
വിടർന്ന പുഞ്ചിരിയാലേ
പുലർന്നു പ്രഭാതവും.

............................

Please speak – बात कीजिए we agree- हम सहमत हैं

kindly acknowledge - कृपया पावती भेजिए

वापसी- withdrawl up to date – अद्यतन upgrading- उन्नयन

वाउचर –Voucher सतर्कता अनापत्ती vigilance clearance

Without delay – अविलंब Training – प्रशिक्षण stagnation - गतिरोध

Space – अंतरिक्ष रबड़ की मोहर – rubber stamps sale – बिक्री

Refixation of pay – वेतन का पुनर्नियतन कार्यवाही – proceedings

Performance – निष्पादन pay-slip – वेतन पर्ची Radiation - विकिरण

# चित्रों की दुनिया

**-नवनीत** NavneethClass VI
St.Mary's Public School TLA, S/o Jeeva
Balakrishnan,
JTO

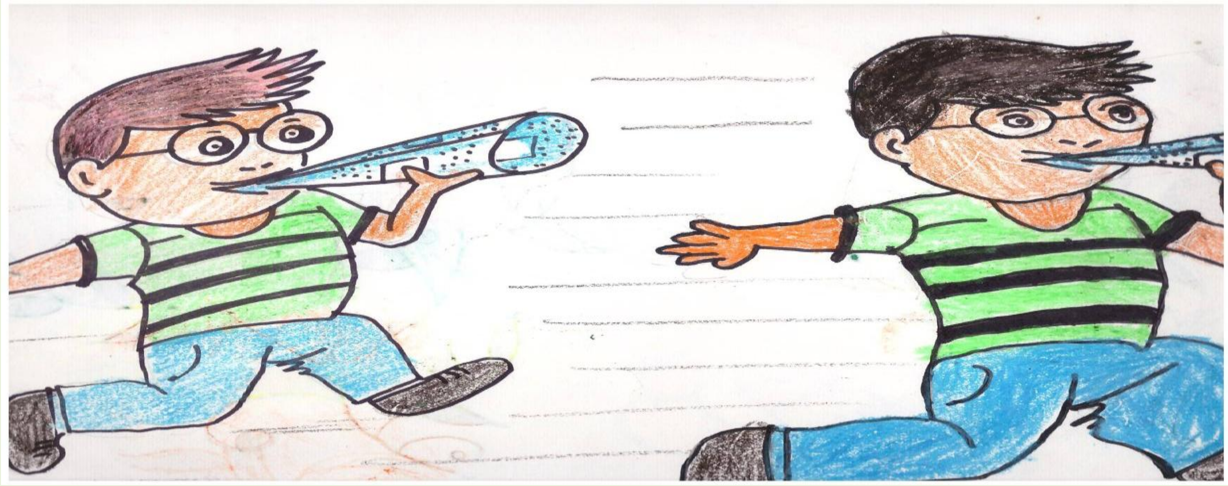

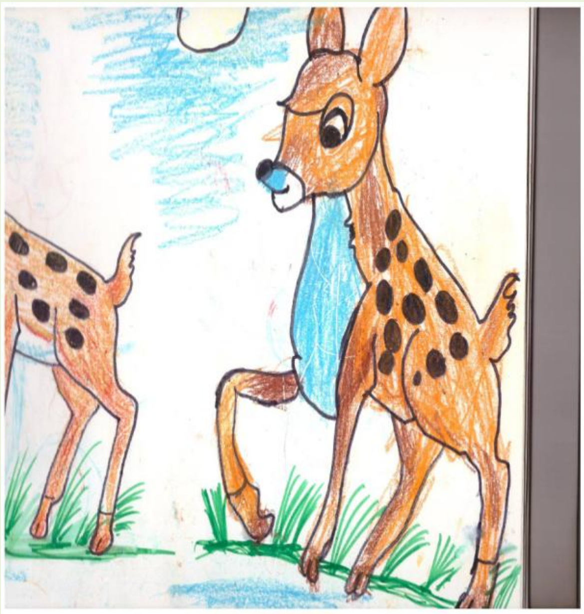

# भारत माता

जोमोल के.जैकब

मैं हूँ स्वतंत्र राणी
सवार करती हूँ सालों से
पञ्चहत्तरीय पे तिरंगा फहराए
देश के कोने कोने के घर- घर में।
खुले आसमान की विशालता से,
पानी की गहराई से मैं सवार करती हूँ।
जानिए, मुझे इक कहानी है बताने
बदल बदलके विदेशियों के
कब्जे में रखा मुझे बरसों तक
गुण-दोषो के दरवाज़ा सामने
देशप्रेमी महात्मजों के तप से
मुझे मिल गई मुक्ति तब तो ।
सारे संसार मुझे देखके कहा
देखिए, जीत ली पराधीनता से
बाण थी अहिंसात्मक लडाई
एक फकीर महात्मजी का
मैंने शुरू की यात्रा सफल
झंडा फहराते हुए तिरंगा।

ईमानदार होके पवित्रता से

धैर्य संभालके उम्मीद से

शांति मंत्र रढ़के जाना

प्रगति की सीढ़ियां चढकर

वतन से जीना -मरना तिरंगा लेके

याद रखना हम भारतीय हैं

धडकन में रखना केसरिया

सफेद हरे रंगों का ध्वज सदा

मैं हूँ भारतमाता आगे

खड़ी रहती सफर में

देश के तुम्हारे साथ

युग-युगों तक ताज़गी से ।

.............

-jokudhinpoms2022

**नवनीत** NavneethClass VI

St.Mary's Public School TLA, S/o Jeeva Balakrishnan, JTO

# സ്വാതി തിരുനാൾ രാമവർമ്മ

പത്തൊമ്പതാം നൂറ്റാണ്ടിൽ (1829-1846) തിരുവിതാംകൂർ ഭരിച്ചിരുന്ന രാജാവാണ് **സ്വാതി തിരുനാൾ രാമവർമ്മ**. സ്വാതി (ചോതി) നക്ഷത്രത്തിൽ ജനിച്ചതു കൊണ്ടാണ് സ്വാതി തിരുനാൾ എന്ന പേര് ലഭിച്ചത്. ഈ പേരിലാണ് കൂടുതലായും അറിയപ്പെടുന്നത്. തിരുവിതാംകൂറിൽ പ്രാകൃതമായ ശിക്ഷാരീതികളടക്കമുള്ള അനാചാരങ്ങൾ നിർത്തലാക്കിയ പ്രഗൽഭനായിരുന്ന ഭരണാധികാരി ആയിരുന്നു അദ്ദേഹം. തിരുവനന്തപുരത്തെ ഏറ്റവും പഴക്കം ചെന്ന സ്ഥാപനങ്ങൾക്ക് പിന്നിൽ സ്വാതി തിരുനാളിന്റെ നേതൃത്വമാണ് ഉണ്ടായിരുന്നത്. തിരുവിതാംകൂർ സൈന്യത്തിന് നായർ പട്ടാളമെന്ന പേരു നൽകിയതും, മൃഗശാലയ്ക്ക് തുടക്കമിട്ടതും അദ്ദേഹമായിരുന്നു. വാനനിരീക്ഷണ കേന്ദ്രം, തിരുവനന്തപുരം യൂണിവേഴ്സിറ്റി കോളേജ്, ആദ്യ സർക്കാർ അംഗീകൃത അച്ചടിശാല, കോടതി, നീതി നിർവഹണസംപ്രദായത്തിന്റെഅടിസ്ഥാനമായ *തിരുവിതാംകൂർ കോഡ് ഓഫ് റെഗുലെഷൻസ്*, ആദ്യ കാനേഷുമാരി കണക്കെടുപ്പ് തുടങ്ങിയവ അദ്ദേഹത്തിന്റെ ഭരണപരിഷ്കാരങ്ങ ണ്. കേരള *സംഗീത ത്തിന്റെ ചക്രവർത്തി* എന്നറിയപ്പെടുന്നു.ബഹുഭാഷാപണ്ഡിതനും, സകലകലാവല്ലഭനുമായിരുന്ന സ്വാതിതിരു നാളിന്റെ വിദ്വൽസ്സദസ്സ് **ഇരയിമ്മൻതമ്പി, കിളിമാനൂർ രാജരാജ കോയിതമ്പുരാൻ തുടങ്ങിയ കവിരത്നങ്ങ ളാലും, ഷഡ്കാല ഗോവിന്ദമാരാർ തുടങ്ങിയ സംഗീതപ്രതിഭക ളാലും, വടിവേലു, ചിന്നയ്യ, പൊന്നയ്യ എന്നീ നാട്ടുവന്മാരാലും അലങ്കരിക്കപ്പെട്ടിരുന്നു.** തൻറെ രാജ്യം ശാസ്ത്രീയാന്വേഷണരംഗത്ത് യൂറോപ്യൻ രാഷ്ട്രങ്ങൾക്കൊപ്പം പങ്കെടുക്കണമെന്നാ ഗ്രഹിച്ച സ്വാതി- തിരുനാൾ 1837-ൽ തിരുവനന്തപുരത്ത് വാനനി രീക്ഷണ കേന്ദ്രം സ്ഥാപിച്ചു. കൊട്ടാരത്തിൽ ഇംഗ്ലീഷ് ഭിഷഗ്വരനെ നിയമിച്ചതിൻറെ ഫലമായി ഇംഗ്ലീഷ് ചികിത്സാരീതിയുടെ ഗുണമറിഞ്ഞ അദ്ദേഹം ആ സൗകര്യം പ്രജകൾക്കും ലഭിക്കുവാൻ വേണ്ടി കൊട്ടാരം ഭിഷഗ്വരൻറെ മേൽനോട്ടത്തിൽ തിരുവനന്തപുരത്ത് ഒരു സൗജന്യ ആശുപത്രി തുടങ്ങാൻ ഉത്തരവിട്ടു. പാശ്ചാത്യ എഞ്ചിനീയറിംഗ് വൈദഗ്ധ്യം മനസ്സിലാക്കിയ അദ്ദേഹം റസിഡന്റായിരുന്ന കേണൽ ഫെയ്സറുമായി ആലോചിച്ച് ഒരു എഞ്ചിനീയറിംഗ് വകുപ്പ് സ്ഥാപിക്കുവാൻ കൽപിച്ചു. നാഞ്ചിനാട്ടെയും തിരുവനന്തപുരത്തെയും ജലസേചനജോലികളുംമറ്റ് പ്രധാന ജോലികളും ഈ വകുപ്പിനെ ഏൽപിച്ചു. വാനനിരീക്ഷണകേന്ദ്രത്തിനു സമീപം ഒരു അച്ചടിശാല തുടങ്ങുകയും ഒരു 'കല്ലച്ച്' സ്ഥാപിക്കുകയും പിന്നീട് അത് മാറ്റി ഒരു പ്രസ്സ് ഇംഗ്ലണ്ടിൽ നിന്ന് വരുത്തുകയും അത് സ്ഥാപിച്ച് അച്ചടി വകുപ്പ് പുതിയതായി ആരംഭിക്കുകയും ചെയ്തു. 1839-ൽ തിരുവിതാംകൂറിലെ ആദ്യത്തെ ഇംഗ്ലീഷ്-മലയാളം കലണ്ടർ ഈ പ്രസ്സിൽ നിന്നും പുറത്തിറങ്ങി (കൊല്ലവർഷം 1015-ലെ കലണ്ടർ). സെൻസസ് 1836 -ൽ തുടങ്ങിയത് അദ്ദേഹമാണ്. പബ്ലിക് ലൈബ്രറി തുടങ്ങി. എല്ലാജില്ലകളിലും മുനിസിഫ് കോടതികൾ തുടങ്ങി. കോട്ടയ്ക്കകത്ത് വലിയ 'ഗോശാല' നിർമ്മിച്ചു. തിരുവന്തപുരത്ത് മൃഗശാല തുടങ്ങി. ഹജൂർ കച്ചേരി കൊല്ലത്തു നിന്നും തിരുവനന്തപുരത്തേക്ക് മാറ്റിസ്ഥാപിച്ചു. അദ്ദേഹത്തിൻറെ ജീവിതം തിരുവിതാംകൂറിനു മാത്രമല്ല, ഇന്ത്യയ്ക്കാകെ തന്റെ അവിസ്മരണീയമായിരുന്നു. അനുഗ്രഹീതകലാകാരനായി വളർന്നു വന്ന സ്വാതി തിരുനാൾ മഹാരാജാവ് ഇന്ത്യൻ സംഗീതത്തിലെ അത്യുജ്ജ്വല ചൈതന്യമായി തീർന്നു. സ്വന്തം വേദനകൾ ആത്മാവിലേക്കൊതുക്കി പ്പിടിച്ച് അദ്ദേഹം ഗാനങ്ങൾ രചിച്ച് അവയ്ക്ക് ഈണങ്ങൾ നൽകി. ഇന്ത്യയുടെ നാനാഭാഗത്തു നിന്നും തിരുവന്തപുരത്തെ കൊട്ടാരത്തിലേക്ക് കലാകാരന്മാരും കലാകാരികളും വിദ്വാന്മാരും വിദൂഷികളും വന്നുചേർന്നുകൊൺടേയിരുന്നു. മഹാരാജാവ് അവരുടെ രക്ഷിതാവും പ്രോത്സാഹകനു മായിത്തീർന്നു. മഹാരാജാവിൻറെ പ്രശസ്തിയും സ്വാധീനവും ബ്രിട്ടീഷ് അധികാരികൾക്ക് വിഷമതയുണ്ടാക്കി. അദ്ദേഹത്തെ നേരിട്ടെതിർക്കാൻ കഴിയാതെ അവർ ബുദ്ധിമുട്ടി.. തന്റെ 33-ആം വയസ്സിൽ അദ്ദേഹം നാടുനീങ്ങി..

...................

# ओणम 2022